RNI NO.-MPHIN/2011/37953

नवरत्न परिवार का राष्ट्रीय मासिक मुखपत्र

www.navratrnpariwar.com

नवरत्न संदेश

प्रधान संपादक– राकेश मारवाड़ी वर्ष–5 अंक–04 इन्दौर, मार्च–अप्रैल 2017 पेज–12 मुल्य–5 रुपये 74वां जन्मोत्सव विशेषांक Email- jinshashan@gmail.com

दिल पर चोट करारी है,फिर भी जलवा जारी है...

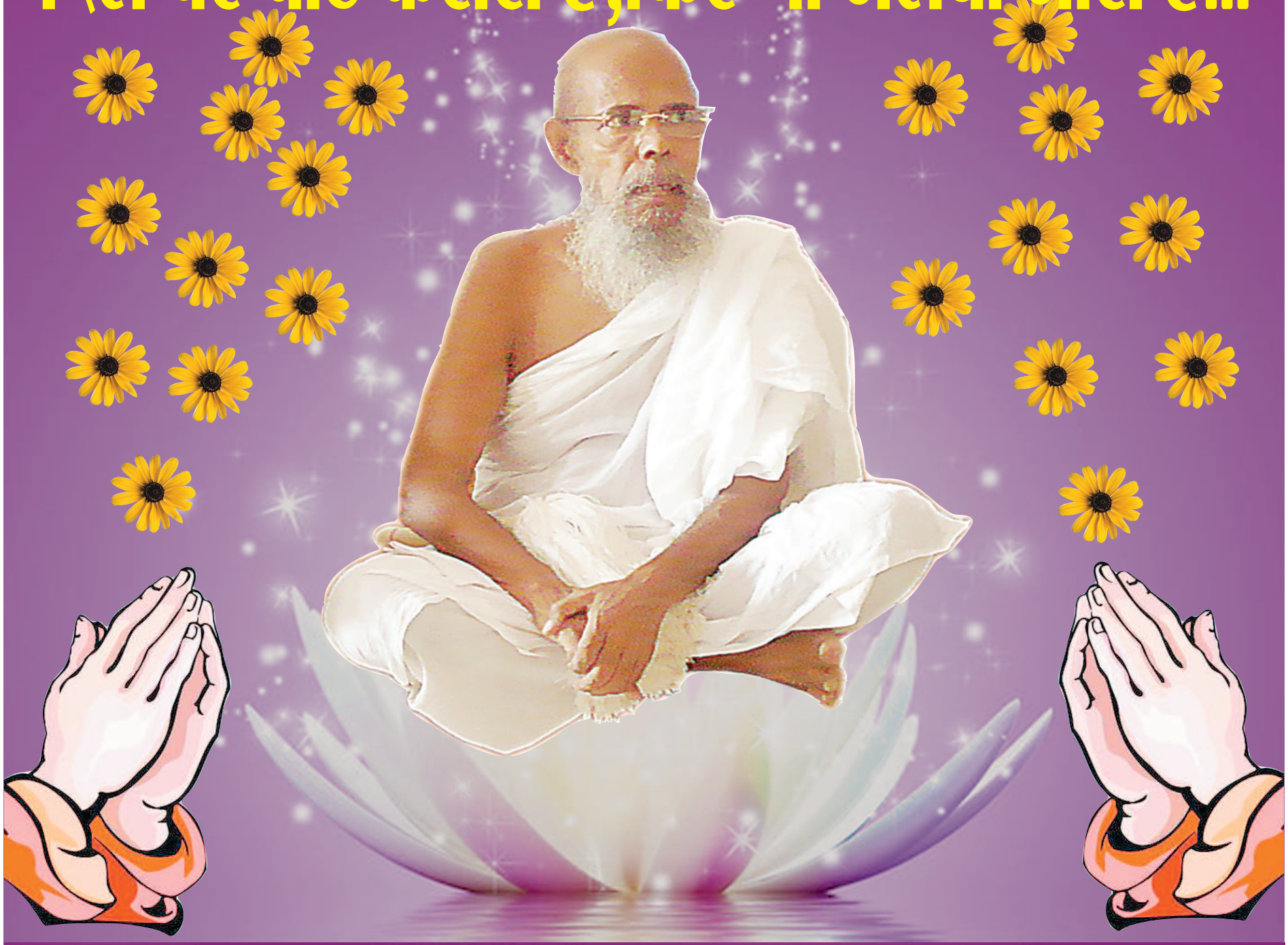

विशेष संपादकीय

वर्ष 2016 प्रथम मास का अंतिम सप्ताह पूरे नवरत्न गुरुभक्तों के लिए एक हृदय विदारक घटना लेकर उपस्थित हुआ। वैल्लूर से बैंगलोर की और बढ़ रही नवरत्न धवल सेना के महानायक भोपावर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. का 3 दिन चिकित्सालय में अंतिम चिकित्सा लेकर विहार प्रारंभ किया। और वह विहार उस महामहिम के लिए महाविदेह क्षेत्र का प्रयाण की तरफ बढ़ गया।

जन-जन की आस्था एवं श्रद्धा के केंद्र प.पू. मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी मसा का एकदम अचानक हम सभी को असहाय सा छोड़ जाना एक अपूरणीय क्षति उपस्थित करके हमको रोता बिलखता छोड़कर चले जाने के बाद आज भी भारतवर्ष भर का गुरुभक्त अपने आपको संभाल पाने में आज भी असमर्थ महसूस कर रहा है।

हम सभी गुरुभक्तों नवरत्न परिवार के साथ आपके शिष्य प्रशिष्यगणों पर भी निश्चित ही एक व्रजपात जैसा घटनाक्रम घटित हुआ है।

प्रभु महावीर के कर्मवाद सिद्धांत को ध्यान में लाकर हम सभी ने विधि के विधान को स्वीकार किया है। ओर आपके जाने के 15 माह पश्चात भी आप को देह रूप में ना सही दिव्य रूप में अहसास किया है।

आपके संयमलक्ष्मी नवरत्न परिवार पर आपकी दिव्य दृष्टि निरंतर अनवरत रूप से बरस रही है। आपके अनन्य कृपा पात्र युवा हृदय सम्राट आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के पुण्योद्य में आपका पूण्य परचम पूरी तरह समाया सा दिख रहा है। चैन्नई, बैंगलोर, बाराकती, कोल्हापुर, सूरत, अहमदाबाद, डीसा, शंखेश्वर, वरमाण, जीरावला, सिरोही, नीमच, बड़ौद में आयोजित महामांगलिक, दीक्षा, चातुर्मास, अंजनशलाका प्रतिष्ठा महामहोत्सव सह अनेक शासन प्रभावक आयोजन में आपका दिव्य आशीर्वाद परिकल्पना से बाहर प्रतीत हो रहा है।

मालव विभूति आचार्य भगवंत श्री अपूर्व मंगल रत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा., प.पू. ज्योर्तिविद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्न, जितरत्न, चंद्ररत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा., प.पू मालव रत्न आचार्य भगवंत श्री जयरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा., प.पू. मालव मार्तण्ड आचार्य भगवंत श्री सागर सूरीश्वरजी म.सा., प.पू. बागड़ विभूषण आचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा., सह तमाम गुरु भगवंत पल-पल, हर पल, हर क्षण आपकी कृपा का आशीर्वाद पाकर अपने आत्मोद्धार के पथ पर अग्रसर है। है गुरुदेव।

आपनो भरतक्षेत्र से महाप्रमाण कर निश्चित रूप से महाविदेह क्षेत्र में अवतरित हो गए होंगे। जो लाड़, प्यार, दुलार, वात्सल्यता, स्नेहशीलता, अपनत्व आपनों को इस भवोभव में हम सभी को प्राप्त हो।

यही आपके जन्मोत्सव की अपेक्षा...।

राकेश मारवाड़ी

नवरत्न परिवार का राष्ट्रीय मासिक मुखपत्र
नवरत्न संदेश

शुभाशीर्वाददाता

जन-जन की आस्था एवं श्रद्धा के केंद्र महान तपस्वी प.पू. मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा.

मंगल प्रेरणा स्त्रोत

जिन शासन हित चिंतक युवा हृदय सम्राट प.पू.आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

नवरत्न परिवार की राष्ट्रीय कार्यकारिणी

संरक्षक
श्री ललित सी. जैन, इंदौर 9425107692
श्री रमेश कुमार हरण, बैंगलोर 9845061920

सलाहकार बोर्ड अध्यक्ष
श्री सी.ए. प्रतीक डोसी, मंदसौर 9826081300

अध्यक्ष
श्री पवन सुराणा, आष्टा 9926685705

उपाध्यक्ष
श्री नरेन्द्र भाई वाणीगोता, मुंबई 9820632733
श्री प्रीतेश ओस्तवाल, इंदौर 9425312035
श्री धर्मचंद्र जैन, नागेश्वर 9425491062
श्री संजय धारीवाल, हाटपिपलिया 9009718722

महासचिव
श्री राकेश मारवाड़ी, प्रतापगढ़ 9414308595

कोषाध्यक्ष
श्री महेश जैन तहलका, मंदसौर 9425105511

प्रबंधक
श्री जितेन्द्र पोरवाल, दलौदा 9425105921

प्रवक्ता
श्री प्रशांत सकलेचा, नलखेड़ा 9425318888

संगठन मंत्री
श्री अनुदीप चौहान, उन्हैल 9098274736
श्री संजय मेहता, डूंगरपुर 9414104805
श्री मुकेश गांधी, सागवाड़ा 9414567830
श्री सुदर्शन मंडोवरा, देपालपुर 9926033009

आमंत्रित सदस्य
श्री दिनेश बाफना, खम्मम 9490704495
श्री मुकेश बम, लिमड़ी 9825998750
श्री नीतू भाई वोरा, सतना 9893035572
श्री मुकेश जैन सांचोर, मुंबई 9920702721
श्री श्रेणिकजी जैन, भीलवाड़ा 9167972953
श्री सतीश नाहर, बाजना 9424020097

मध्यप्रदेश अध्यक्ष
श्री रखब विजावत, बड़ौद 9630364555

राजस्थान अध्यक्ष
श्री प्रवीण संघवी, कोटा 9414188045

वागड़ प्रदेश अध्यक्ष
श्री सुबोध सरैया, डूंगरपुर 9414104677

संकल्प

माता के उपकार चुका सकते है।
दाता के उपकार चुका सकते है।
पर करोड़ों जीवन में भी गुरुदेव के
उपकार को चुका नहीं सकते है।

प.पू. मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी के चरणों में आचार्य श्री अपूर्व मंगल रत्न सागर श्री व शिष्य प्रशिष्य प्रशम, आगम, व्रजरत्न सागर का कोटि-कोटि वंदना...

मालव माटी के पुकार नवरत्न गुरुवर
आओ एक बार
नवरत्न गुरु आप शासन के
सिरताज हो
आपकी तप जप की शक्ति पर
हमको नाज है
युग-युग तक रहेगा नाम
आपका अमर धरापर
यही सकल संघ की मंगल
आवाज है

मालव भूषण प.पू. नवरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. आपके जीवन की गौरव गाथा अगर मैं लिखने भी जाऊं तो भी पूरी नहीं हो सकती। क्योंकि आपके जीवन में हर रोज एक नया इतिहास का सर्जन होता है। आप का जीवन एक उपदेश रूप था। कोई भी आपसे मिलता था तो मानो ऐसा लगता था साक्षात भगवान से मिले। क्योंकि आपके जीवन की दिनचार्य भगवान की भक्ति में जाता था। अगर आपके पास कोई भी आता तो आप उसके जीवन में सात व्यसन से दूर रहने की प्रेरणा करते थे। व मानव जीवन का सार क्या है वो भी सब कुछ समझाते थे। आप श्री का एक ही लक्ष्य था कोई भी मेरे पास आए तो कुछ लेकर जाए जो भी व्यक्ति नियम लेकर जाता तो आप बहुत खुश होते थे जिसे एक व्यापारी को व्यापार में कुछ लाभ होता तो कितना खुश होता उसी प्रकार आपके पास कोई नियम पच्चक्क खान करता तो आप बहुत खुश होते थे।

क्या कहूं गुरु देव आपके जब के बारे में
75 वर्ष की उम्र में बी क्या शक्ति थी।

जब भी आपको देखते है तो ऐसा लगता था क्या त्याग की मूर्ति है मन हमेशा परमात्मा की भक्ति में, हाथ में एक माल चौविसी घंटे साधना में लीन रहते थे। आपकी साधना देखकर ऐसा लगता था क्या आपको शासन के प्रति कितना राग था। कोई भी समय व्यर्थ न जाए। हर समय को आप साधना में लगाते थे। बस एक ही सोच थी मुझे शासन मिला है मानव भव मिला इसे व्यर्थ न जाने दूं। जर्बदस्त संयम पाने की चाहना, जीवों के प्रति दया।

आपकी हर आराधना साधना में जयणा रखते थे। अगर आपके पास कोई धर्म समझने आते तो आप गौचरी छोड़कर भी पहले आप धर्म क्या है। और क्यों करना चाहिए? ये सब समझाते थे। हमेशा एक ही शब्द धर्म बोलते थे, समस्त जीवों पर दया करो तो भगवान तुम्हें याद करेगा यही उपदेश देकर व्यक्ति के जीवन में धर्म का बीज बोते थे।

मेरे गुरु नवरत्न सागर की यह दुनिया है दिवानी...

आनंदित कर दे रोम-रोम को
ऐसी जिनकी वाणी है
सन्यासी बन मानवता की
सेवा जिन्होंने मन ठानी है
नहीं जिनके लिए कोई
राजा रंक व रानी है
मेरे गुरु नवरत्न सागर की
यह दुनिया दीवानी है...

गुरु चंद्र से संयम लेकर
प्रभु महावीर के चले पथ पर
सद्ज्ञान व संस्कार के
दिए जलाए डगर-डगर पर
ऐसी अद्भूत और निराली
जिनकी जीवन कहानी है
मेरे गुरु नवरत्न सागर की
यह दुनिया दीवानी है

निर्मल छवि ओजस्वी वाणी
मुख पर तेज नजर आए
शहर बस्ती जंगल में घुमे

भटको को नई राह दिखाए
मौसम की परवाह नहीं
ना तुफानों की मानी है
मेरे गुरु नवरत्न सागर की
यह दुनिया दिवानी है ...

नवरत्न ने माया-मोह
और ममता को जान लिया
क्षण भंगुर है जीवन सारा
यह उन्होंने पहेचान लिया
अब तो जिनके लिए ये
सारी दुनिया पानी है
मेरे गुरु नवरत्न सागर की
यह दुनिया दीवानी है

धन्य हो गई वंसुधरा
पाकर स्पर्श चरण रज का
दीजिए हमें सन्मार्ग गुरुवर
समर्पण व सेवा को
हमें उत्तम ज्ञान दो गुरुवर
हम अबुध अज्ञानी है
मेरे गुरु नवरत्न सागर की
यह दुनिया दीवानी है

- युवा हृदय सम्राट के शिष्य
मुनि उत्तम रत्न सागर

अध्यात्म योगी गुरुदेव

भगवान महावीर स्वामी ने अंतिम देशना में कहा भोगी भमड़ संसारे अभोगी विषमुच्चई अर्थात भोगी (अज्ञानी संसार में भटकता है अभोगी (ज्ञानी) संसार से मुक्त होता है। भोग अंधकार है, योग प्रकाश है भोग मृत्यु है योग अमृतमय जीवन हैं, एक ऐसे ही योगी ने आज से 74 वर्ष पूर्व राजगढ़ में जन्म लिया व इस भोगी दुनिया को अध्यात्म योग का मार्ग बतलाया गुरुदेव ने योग के द्वारा अपने काल में अनेक वाषीष्ठ सिद्धि प्राप्त की थी, गुरुदेव निरंतर जीवन में तप योग जप योग– भक्ति योग के द्वारा अध्यात्म के चरम आनंद को प्राप्त करते है व जो बात परमात्मा ने कही अप्पा सो परमप्पा याने हर आत्मा परमात्मा है।

वहीं बात का गुरुदेव ने अध्यात्मयोग के द्वारा अनुभूति की व फिर वही परमात्मा की वाणी का अनुकरण किया व कहां। कि हां हम भी भगवान बन सकते हैं, हम भी सिद्ध बन सकते है हम भी परम पद को प्राप्त कर सकते अत्मा कोपरमात्मा में परिवर्तन करना कोई बड़ा काम नहीं है यदि सही दिशा में पुरुषार्थ किया जाए तो प्रत्येक आत्मा परमात्मा बन सकता है। प्रत्येक जीवन भगवान बन सकता है। **स्वयं को जानो, स्वयं को पहचानों स्वयं में लीन हो जाऊ भगवान बन जाओंगे** गुरुदेव ने जो कहा पहले स्वय अनुभव किया व अनुभव की वाणी के द्वारा कहा गुरुदेव ने कहा अष्ट के क्षय से ही सद्गति की प्राप्ति होती है आंठों कर्मों का राजा मोहनीय है तेरा-मेरा अच्छा बुरा ये चार शब्द मोहनीय कर्म की राजधानी है इन ही चार शब्दों के आधार पर जीवन को मोहनीय कर्म नचाता है व संसार में चक्कर लगवाता है मोहनीय कर्म का क्षय होते ही अन्य कर्म स्वत: ही क्षीण हो जाते है गुरुदेव ने जो ज्ञान हम अज्ञानी, अबोध जीवो का दिया उसे हम कदापि नहीं भूल पाएंगे आज चाहे गुरुवर हमारे बीच में नहीं है लकिन गुरु देव की द्वियकृपा हमारे ऊपर है गुरुदेव से हम तो इतना ही कहेंगे की गुरुदेव आप ने जो शुद्ध विशुद्ध उत्कृष्ट जीवन जिया उसके कुश अंश हमारे अंदर भी आए व हमारी आत्मा भी परमात्मा में परिवर्तित हो जाए यही अभिलाषा...

– युवा हृदय सम्राट के शिष्य
मुनि उत्तम सागर

गुरुदेव आपके साथ बिताया पल जब भी याद आएगा
इस जन्म के बाद भी आपका ख्याल आएगा
अगर बख्सी प्रभु ने बार-बार जिंदगी
तो यह उत्तम आपको ही हर बार गुरु बनाना चाहेगा...

मालवा के भगवान नवरत्नसुनू के प्राण नवरत्नगुरु आपके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम

क्या लिखूं? कैसे लिखूं? शब्द भी कम पड़ जाते हैं जिनके गुण वैभव को गाने में आपकी सरलता को देखकर साक्षात प्रभु मिलन की अनुभूति होती थी। आपके चहरे की मुस्कान हमारे हृदय की हर एक पीड़ा को समाप्त कर देती थी।

वह प्यारी सी स्मित से हर मानव को अपनी समस्या का समाधान मिल जाता था। मुझे आपने ऊर्जा दी कभी मुझमें साहस भरा तो कमी मेरे अंदर प्रवेश करते हुए अहंकार को तोड़ा। कभी भी बाहर का एहसास ही नहीं करने दिया। ऐसी कई सारी चीजों को आपने भरा है। आप सदैव साधना करते हुए भी आप ने हमें संवारा संभाला है। आज हम जहां पर भी खड़े है जो कुछ भी योग्य बने है तो उसमें सब कुछ आपका है। मेरे तरणतारणहार के बारे में मैं क्या लिखूं? जिससे बोलना सिखा है लिखना सिखा है। उनके बारे में क्या लिखूं और क्या बोलू नहीं समझ पाता हूं बस गुरुदेव आप ऐसी आशीष वर्षा करना की हम सदैव आपके मार्ग पर चलते रहे थोड़ा साथी आपके बताए मार्ग से विमुख नहीं हो ऐसी कृपा बरसाना।

– नवरत्न सुनू अक्षत रत्न सागर

गुण के सागर गुरुदेव

गुरु स्मरण गुरुस्तुति गुरु गुण स्तवना करने का अध्यात्म योग याने महागुरु की महागाधा

जगदानंद जगद उद्धारक जगतारण काम धेनु कुम्भकलश श्रद्धापूंज अनंतानत आस्था के केंद्र अलौकिक संत नवरत्न सागर स.री जी महाराजा जिनका जीवन अलौकिक अनुपम अपर्णनिय स्वर्णिम सौगात, सौपान स्वइप दिव्य भव्य था जो हमेशा स्वयं से जुड़ने वालों को वनसे उपवन की और कांटों से गुलशन की और जंगल से महामंगल की और अंधकार से प्रकाश की और ले जाते थे जिन महापुरुष की हित शिक्षा हमेशा जहन में घुमति रहेगी है जो हमेशा कहते थे यात्रा भितु यात्री मितु है मार्ग मितु है मंजिल मितु है हमेशा कहते थे तू बस एक बार चलने का प्रयास कर तू तेरी जगह पर तेरी जगह पर पहुंच जाएगा लोग कहते है है कि हमसे दूर चले गए लेकिन उन लोगों से कहता हूं जब तक आप मेरी सांसे चलती रहेगी। तब आप जीवित है और जिस दिन मेरी सांसे बंध होगी। वह आपका आखिर दिन होता है। सतगुरु मेरे नजरों में ऐसी खुदाई है जिधर देखु उधर सिर्फ तुम्ही तुम दिखाई देते हैं जब भी स्मरण करे ये वहां तेरा, मेरी सांस सास में सिर्फ तुम्हीं तुम दिखाई देते हों। सिर्फ तेरा ही नाम सुनाई देता है।

– गुरुशिष्य चरण दास मुनि तीर्थरत्न सागर

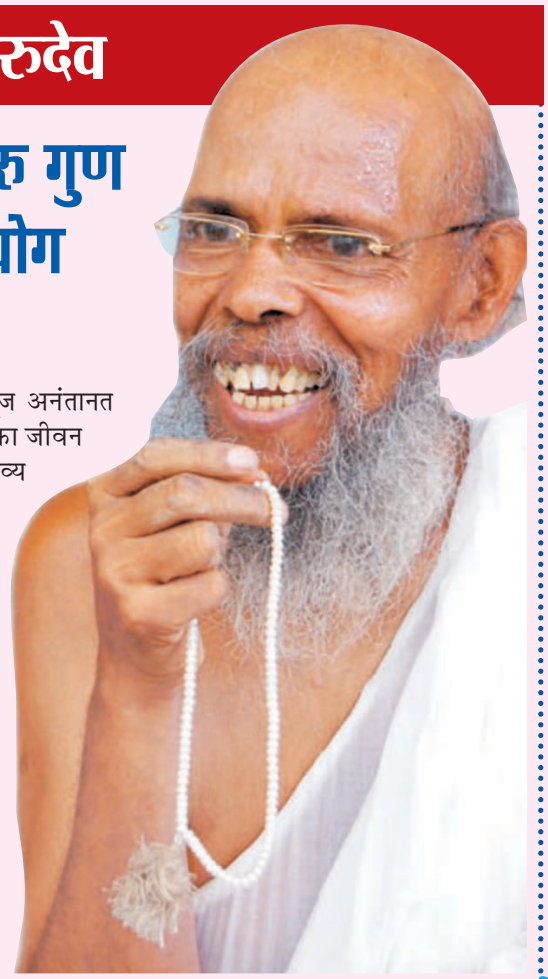

संस्कृत स्तुति

नरै: नरेन्द्रै: प्रणतं मुनिन्द्रं
विदां वदान्यं विधुतुल्य सौम्यम्
शांत नितांत गुणिनं गुणज्ञं
नमामि नित्यं गुरु नवरत्नम्
नमामि नित्यं गुरु विश्वरत्नम्

असार सारौ सरल स्वभाव
ज्ञातुं प्रशक्तुं प्रति बोधनार्थम्
सुप्तां जगत्यां जनतां सुदक्षं
नमामि नित्यं गुरुनवरत्नम्
नमामि नित्यं गुरु विश्वरत्नम्

अन्तर्विशालं सुविवेकशीलम्
धीरं सुवीरम् तपस्या भवानाम्
कर्मारिवृन्दस्य जयाय शक्तं
नमामि नित्यं गुरुनवरत्नम्
नमामि नित्यं गुरु विश्वरत्नम्

– मुनि उत्तमरत्न सागर

नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराज याने क्या

वर्तमान में प्रभु के शासन के इतिहास को पढ़ने वाले बहुत होंगे वर्तमान में प्रभु शासन के इतिहास को सुनने वाले बहुत होंगे, परंतु वर्तमान में प्रभु शासन में 72 वर्ष की आयु में भी पैदल चलना, वर्धमान तप की ओली करके इतिहास बनाने वाला कोई हो 194 तो वे हैं

- नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा

नामना की थोड़ी भी कामना नहीं
तपस्या में थोड़ा भी प्रमाद नहीं
जाप साधना में थोड़ी भी कचाश नहीं
याने नवरत्न सागरसूरीश्वरजी महाराजा

पाचवें आरे का आश्चर्य कहो
या कलिकाल का कल्पतरु कहो
या तपस्या का परिचय कहो
याने नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा

मुख पर सदा प्रसन्नता होती
चेहरे पर तप की चमकता होती
शासन के लिए मर मिटने की भावना होती
याने नवरत्नसागर सूरीश्वर महाराजा

चंद्रसागर सूरि जी के ये वंश है
सागर समुदाय के ये अंश है
मणिबेन के ये नंदन है
हम सब का इनको वंदन है

- मुनि उज्ज्वलरत्न सागर

मझधार में भी किनारा मिल गया....

मझधार में भी किनारा मिल गया
तूफान में भी सहारा मिल गया
गजब है गुरु नव रत्न के नाम का करिश्मा
अंधेरे में भी उजाला मिल गया...

आचार्य नवरत्न सागर सूरी महाराजा
उनके जीवन के बारे में जीतना लिखो उतना कम है
क्योंकि कहा है... महापुरुषों के बारे में लिखना
याने सूर्य समक्ष दीपक धरना, क्योंकि एक आम
इंसान की जिंदगी को देखा तो ऐसा लगा कि इस
कि जिंदगी में कुछ भी नहीं है...

वो ही दृष्टि गुरुदेव के ऊपर जाती है तो ऐसा अहसास
होता है कि क्या इनकी जिंदगी में नहीं है...
74वें जन्म दिवस पर में परमात्मा से यहि प्रार्थना
करता हूं कि उनके जीवन में जो अनेक गुण थे
उनमें से मेरे जीवन में भी कुछ उनके गुण के आए अंश आए...

करती है त्याग तपस्या यह धरती कई हजारों साल
तब जाकर पैदा होता है मणिबाई का लाल...

- मुनि उदय रत्न सागर जी

एक व्याख्यात कवि की बाद याद आ रही है...

संतों का आना और वसंत का आना एक समान है, क्योंकि वसंत आता है तो प्राकृति बदल जाती है और संत आते हैं तो संस्कृति बदल जाती है। परमपूज्य आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीश्वर महाराज साहब जो मालवा में भगवान के समान पूजे जाते हैं, जिनके तप, जप और साधना की कोई सीमा नहीं, आचार्य भगवंत सीधे, सरल और अनेक गुणों के भंडार थे, संयम जीवन भी बड़ी अच्छी और चुस्तता से पालते थे, गुरुराज का चैन्नई में प्रवेश हुआ और चातुर्मास के दौरान सतत उनके प्रवचन से प्रेरित होकर मैंने उनकी प्रेरणा से अपने संयम लेने की भावना को मजबूत किया वहां से मेरा टर्निंग पाइंट शुरू हुआ, आज हमारे बीच गुरुवर नहीं रहे लेकिन उनका जाने का गम तो है लेकिन खुशी भी है कि मुझे उनके परिवार का सदस्य बनने को मिला, मैं गुरुराज के 74वें जन्मदिन पर कोटि-कोटि वंदन करता हूं और उनसे यही प्रार्थना करता हूं कि आप जहां भी रहो मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करना की मैं आपके बताए हुए राह और नियमों पर चलकर शुद्ध चारित्र पाल कर जल्दी मोक्ष पद को प्राप्त करूं। यही शुभेक्षा।

नूतन दीक्षित
मुनि लब्धिरत्न सागर

आचार्य श्री का जीवन ही एक संदेश बनता था उनके जीवन में ज्ञान दर्शन, चारित्र तप और विर्य या पांच आचार के बारे में देखते हैं...

ज्ञानाचार : सतत स्वाध्याय में एक ओर अगर कोई से कुछ पूछना है तो खुद आचार्य होने के बावजूद नीचे बैठते थे। ज्ञानी का विनय, पाट पर अक्षर है तो पानी भी नहीं पीते थे और सबको ज्ञान की विराधना से बचने की प्रेरणा करते रहते

दर्शनाचार : सभी में गुण का दर्शन करना एक बार शराब पीने वाले बकरी चराने वाले को प्रेरणा देने लगे मैंने कहा ये कुछ समझने वाला नहीं है क्यों टाइम बिगाड़ते का साहेबजी ने कहा शायद कोई भव में ये भी मुझे धर्म बताने वाला बने इसीलिए कितनी ऊंचे और विशाल है उनका भावना।

चारित्राचार : चरित्र के बारे में जरा भी बांधछोड़ नहीं करते खुद की उपधि आसन और कपड़े खुद उठाना गाड़ी या साइकल पर कोई भी सामान नहीं रखना तो उपयोग नहीं करना, विहार में मोझे का भी उपयोग नहीं व्हीलचेयर भी कभी नहीं लगाई, उनका चारित्र ही एक संदेश था।

तपाचार : 16 साल से एकांतर दो वर्षीतप वीस स्थान तप एकांतर से उसमें भी पांचम और चौदस हो छठ, अष्ठमी त्रीज, वदी नवमीं आंयबिल और बारह तिथि हरित्याग, आंयबिल कालधर्म के पहले एक बार मैंने तीन द्रव्य रखे तो बोले दो द्रव्य से होता है तो तीसरे द्रव्य की क्या आवश्यकता है यह प्रेरणा ही मुझे तो बांध देता है कहा साहेबजी का त्याग ओर हम कैसे।

विर्याचार : साहेबजी ने हमेशा अपनी शक्ति का उपयोग परमार्थ में किया है पैदल विहार, गिरीराज पर 55 मिनट में ऊपर चढ़ जाते थे दोनों टाइम उबयटंक खड़े होकर प्रतिक्रमण करते थे।

- मुनि आदर्शरत्न सागर

रतन कुमार से बने आ. नवरत्न सागर सुरी महाराज

मालवा मप्र के धार जिले में राजगढ़ में जन्में रतन कुमार जो वर्तमान में जिनशासन की शोभा बढ़ाने वाले मालवा के भगवान समान भीष्म तपस्वी सुरी मंत्र के आराधक जीवदया प्रेमी के नाम से विश्व में अपनी पहचान बनाने वाले आचार्य भगवंतों में एक ही थे। जन्म से पिता लालचंद्रजी व माता मणीबाई के सुसंस्कारों के सिंचन के कारण जिनशासन के चमकते सितारों में से एक थे। इनके माता-पिता ने भी श्रावक धर्म के आवश्यक कर्तव्यों के अन्तर्गत उचित विवाह का निर्वाह करते हुए विवाह के समय की तयकर लिया था कि अपनी एक संतान को जिनशासन में देकर अच्छे श्रावक-श्राविका होने का गौरव प्राप्त करेंगे और ऐसा ही हुआ दो पुत्र हुए एक को शासन को समर्पित किया। माता-पिता के सुसंस्कारों को पाकर माता-पिता की इच्छा को सर्वोपरी मानकर मात्र 11 वर्ष की उम्र में संयम मार्ग की यात्रा प्रारंभ हुई और 73 वर्ष में समाप्त हुई।

पिता श्री के आग्रह पर आचार्य भगवंत श्री चंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. की राजगढ़ में चातुर्मास करने की शर्त पर अपने कुलदीपक को गुरुचरणों में समर्पित कर अपना कर्तव्य निभाया यहां से रतन कुमार की संयम यात्रा चालू हुई और रतन कुमार से आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरी महाराजा बन गए जैसे-जैसे बड़े हुए गुरु के आशीर्वाद से तप, साधना, जाप, स्वाध्याय के क्षेत्र में इतने आगे बढ़ते गए जिसका वर्णन करने के लिए सागर की गहराईयों में जाना पड़ेगा। जैसे सागर अपने अंदर कंकर, पत्थर, कचरा सबको समा लेता है। वैसे ही आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरी महाराज ने सागर के समान गंभीर बनकर न काहु से दोस्ती न काहु से बैर, न कोई बड़ा न कोई छोटा, न पैसे वाला न गरीब वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए गुरु के वर्णन को सदैव तहति कहने वाले निरंतर साधना के शिखर पर आगे बढ़ते गए। उनकी दिनचर्या पर नजर डाली जाए तो जीवदया के प्रति करुणा के भाव देखने को मिलते थे, आपके रग-रग में तिरने औरो को तिराने के भाव थे, आपकी मुस्काहट में हंसो और हंसाओ की सद्भावना थी आपकी निगाह में उठो और उठाओ का विनय था, आपके आशीष में संभलो और संभालो का दिव्य उद्घोष था, आपके आत्म दर्शन के दिव्य दर्पण थे, आप तप के प्रचंड सूर्य, समता, साधना के महान साधक थे। जैन के अलावा अजैनं, श्रद्धालोक के व मालवा के साथ-साथ विश्व के लोग भगवान स्वरूप मानते थे।

आपकी एक विशेषता थी कि किसी भी सम्प्रदाय से सैद्धांतिक मतभेद अपनी जगह पर थे, लेकिन वैरी, शत्रु के साथ भी समाधि, मैत्रीभाव का संदेश दिया करते थे। ऐसे संत मानव प्रकृति पर अवतरित हुए जो संसार से जाने के बाद सुकृत स्मृतियां छोड़कर चले गए जिनके गुणों, शब्दों का वर्णन करना असंभव है। ऐसे जैनधर्म, शासन के महान रत्न आज हमारे बीच में नहीं है। ऐसा ही मानते है कि गुरुदेव अप्रत्यक्ष रूप से आपके और हमारे साथ ही है। आपके 74वें जन्मदिवस के अवसर पर आपका आशीर्वाद का अमीवर्षा का झरणा सदैव बरसता रहे। सूरज सुबह उगता है और शाम को अस्त हो जाता है, लेकिन जिनशासन का चमकता सूरज दिन में ही अस्त हो गया। मालवा इंदौर से विदाई के समय किसको मालूम नहीं था जिसकी आज विदाई हो रही है। वह पुन: इंदौर कब और किस रूप में चैन्नई से वापस आएगे। लैकिन समय का कोई भरोसा नहीं है। जन्म के साथ मृत्यु भी निश्चित हो जाती है। अंत में चैन्नई वालों ने मालवा वाले की भावनाओं समझकर मालवा के रत्न को मालवा राजगढ़ भोपावर तीर्थ ले जाने की परमिशन दी और आचार्य श्री का अंतिम संस्कार मालवा की माटी में हुआ जिनका इतिहास बना लिखने को तो बहुत है हर चीज की मर्यादा होती है। जिनशासन के आचार्य श्री नवरत्नसूरी महा. को वंदन करते हुए आपका आशीर्वाद हर समय मिलता रहे, बस इसी भाव के साथ हम बस इतना ही चाहते की गुरुदेव जन्म-जरा मृत्यु के बंधन से तोड़कर शिवपुरी में वास करें।

- मुनि गंभीर रत्न सागर

हे गुरुवर!

लगाया जो रंग भक्ति का,
उसे छूटने न देना।
गुरू तेरी याद का दामन,
कभी छूटने न देना।।
हर सांस में तुम और तुम्हारा नाम रहे।
प्रीति की यह डोरी, कभी टूटने न देना।।
श्रद्धा की यह डोरी, कभी टूटने न देना।
बढ़ते रहे कदम सदा तेरे ही इशारे पर।।
गुरूदेव ! तेरी कृपा का सहारा
छूटने न देना।
सच्चे बनें और तरकी करें हम,
नसीबा हमारी अब रूठने न देना।
देती है धोखा और भूलाती है दुनिया,
भ्रति को अब हमसे लूटने न देना।।
प्रेम का यह रंग हमें रहे सदा याद,
दर होकर तुमसे यह कभी घटने न देना।
बैड़ी मुश्किल से भरकर रखी है
करूणा तुम्हारी....
बड़ी मुश्किल से थामकर रखी है
श्रद्धा-भ्रति तुम्हारी....
कृपा का यह पात्र कभी फूटने न देना।।
लगाया जो रंग भक्ति का,
उसे छूटने न देना।
गुरू तेरी याद का दामन,
कभी छूटने न देना।।
जन्मदिन पर हे गुरूदेव!
आपके श्रीचरणों में
अनंत कोटि प्रणाम....

नवरत्न सागर सूरीश्वर जी नाम में समाया कितना अर्थ

न	:	नवरत्नों की खान
व	:	वरना चाहते है जो शिव वधु से
र	:	रत थे जो प्रभु भक्ति में
त्न	:	तीर्थों के उद्धारक
न	:	नहीवत थी जिनमें कषायो की कालीमा
सा	:	सागर समान गंभीर
ग	:	गर्व है जीनशासन को जीन पर
र	:	राहगीर मोक्ष मार्ग के
सू	:	सूर्य के समान तेजस्वी
री	:	रीक्त थे जो कर्मों से
श्व	:	श्वास में बसते हर पल अरिहंत देव
व	:	वीर प्रभु के शासन के सीरताज
र	:	रहते ध्यान में लयलीन
जी	:	जिन शासन प्रभावक
आ	:	आगम के ज्ञाता
चा	:	चारित्र चुडामणी
र्य	:	यतना पूर्वक जीवन
श्री	:	श्री (लक्ष्मी) जिनके चरण कमल में वास करति

- युवा हृदय सम्राट के शिष्य उत्तमरत्न सागर

आपके जीवन यात्रा के गोल्डन मोती

कभी भी आपने नवकार सी का तप नहीं किया
आपने कभी भी मौजे का उपयोग नहीं किया
आपश्री ने एक कांबली से ज्यादा उपयोगी नहीं किया।
हमेशा दो द्रव्य से आयंबिल किया।
अपनी उपधि स्वयं उठाते थे।
कभी भी ठल्ले मात्रे कोलिये बाड़े का उपयोग नहीं किया
रोज सूरीमंत्र का जाप 4–5 घंटे का जाप करना।
तीनों टाईम देववंदन आवश्यक करना कितना भी विहार हो जब तक सूरीमंत्री
का जाप व देव वंदन नहीं हो तब तक गोचरी नहीं वापरना।
प्रतिक्रमण कभी भी बैठे–बैठे नहीं किया।
गुरु महाराज, गुरुभाई, व माताजी की तीथी पर आप आयंबिल का तप करते थे।
आप, पाचम, आठ्म, चउदस को उपवास करते थे।
आपके जीवन में जयणा तो एक प्राण थी।
आपश्री रोज स्वाध्याय करने का नियम था
सारे ड्रायफ्रुट का त्याग था। व फ्रुट का त्याग था।
हमेशा एक माला हाथ में होती थी।
आपने अपने जीवन में कभी किसी को दुखी व परेशान होते नहीं देश सकते थे।

शास्त्र संदेश

कषाय विषयैश्चौरै धर्मरत्न विलुप्यते
वैराग्य खड्गधाराभिः शूराः कुर्वन्ति रक्षणम्।।

अर्थः पारसमणी रत्न लोहे को भी सोना बना देती है। चिंतामणी रत्न चिंताओं को चकनाचूर कर देता है।

धर्मरत्न तो अक्षय अनन्य अनंत अद्भूत
सुख देता है जिसका नाम है (मोक्ष)

जो सत्वशाली व्यक्ति वैराग्य की ढाल के द्वारा
शब्द रूप, रस, गंध, स्पर्श
इन पांच विषय की व
क्रोध मान माया लोभ
इन चार कषायों से
अपने आत्मा की रक्षा करता हो इन नव आत्मघाति शत्रुओं को अपने पास नहीं आने देता हो।
उसे ही यह धर्मरत्न की प्राप्ति होती है।

नवरत्न कृपा प्राप्त
आचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरी

21वीं सदी के महानायक को भावे करुं हूं वंदना...

प.पू. मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागरजी म.सा. को

धन्य हो आपके माता–पिता को जिसने ऐसे पुत्र को जन्म दिया। आपकी माता का नाम मणिबाई था। आपका नाम नाम रतन कुमार था। जैसा नाम था वैसा ही गुण था। इस धरती पर अनेक माताओं ने पुत्र को जन्म दिया है। पर आपने पुत्र को जन्म के साथ–साथ संस्कार भी दिए। जिस प्रकार पारसमणि लोहे को छूने से सोना बन जाता है। उसी प्रकार मणिबाई ने रतन को शासन का कोहिनूर बना दिया। आपने माता बनकर शिल्पी का काम किया।

आपका एक ही उपदेश था। मेरा बेटा रतन कुमार शासन का महान साधक बने। क्योंकि आपको उसकी आत्मा की चिंता थी। मेरे कुक्षी से आया हुआ बेटा रतन कुमार मानव जन्म न हार जाय हर समय आपको उसकी आत्मा की चिंता होती थी। और कहती थी बेटा अब तुझे इस संसार में नहीं आना ऐसी आराधना साधन करना व संयम लेकर संसार के चक्र को खत्म करना है। सच्चा सुख पाना है तुझे, सच्चा सुख ही मोक्ष है। रतन कुमार की मां को बात आत्मा में बैठ गई कि मुझे अब मां का सपना साकार पुरा करना है और आपने मेरे गुरु चंद्रसागर जी म.सा. के पास बाल अवस्था में दिक्षा ग्रहण कर अपना सर्वसव शासन समर्पित कर दिया।

इंदु–गुणजा–सुरेखा श्री जी म.सा. की शिष्या विरागरसा म.सा की तरफ से कोटि–कोटि वंदना।

जीवन में हरपल हंसते रहे आप

स्नेह से हृदय में बरसते रहे आप
छोड़कर साथ हमारा चल दिए आप
जीवनभर गुरुवर याद आते रहेंगे आप...

हमारे पास शब्द नहीं है कि हम आप श्री के गुणों का वर्णन कर सके है परमात्मा हम कैसे आपका शुक्रिया अदा करे कि हमको इतने स्नेहशिल गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त हुआ था। गुरुदेव के हृदय में हमेशा करुणा का झरना बहा करता था। आप श्री का हृदय सौम्य सरल समता से परिपूर्ण था। गुरुदेव के हृदय में सवि जीव कर शासनरसी की भावना हमेशा रहती थी आपश्री के हृदय में सभी जीवों के प्रति स्नेह का सरिता बहता था गुरुदेव आम तप–जप की साक्षात प्रतिमा थे आपका तपबल जपबल वचनबल इतना उत्कृष्ट कोठी का था कि आपके आशीर्वाद से ही हर कोई व्यक्ति तीर जाता था आप श्री का जीवन कोहिनुर हीरे की तरह चमकता था आपके जीवन की खुशबु दुनिया के कोने–कोने में महकती थी रत्नों की खान की तरह आप गुणों की खान थे हम आपसे यही आशीर्वाद चाहते है कि हम भी आपकी तरह ज्ञान ध्यान साधना में आगे बढ़े अद्भूत योगी अद्भूत तपस्वी अद्भूत यशस्वी गुरुदेव के चरणार्विंदे...।

– प.पू. सा. सुरेखा श्रीजी म.सा. की प्रशिष्या प्रियम–प्रियम रसा श्री जी म.सा.

नवरत्न संदेश

सदी की अनमोल सौगात बनी श्री जीरावला दादा की प्रतिष्ठा

समस्त जैन समाज की आस्था व श्रद्धा का केंद्र, प्रगट प्रभावी जग जयवंता श्री जीरावला पार्श्वनाथ परमात्मा की पुर्नः प्रतिष्ठा इस युग की एक अनमोल सौगात बनी है।

जगजवंत प्रातः स्मरणीय विश्व विख्यात विध्नशांतिकर्ता कल्याणकारी मंगलकारी दुखिनिवारी द्रणेन्द्रपद्मावति पूजित 23वें तीर्थ कर जीरावला पार्श्वनाथ भगवान की भव्याति भव्य निर्विघ्न अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

जीरावलातीर्थ। लाखों करोड़ों भाविको की आस्था एवं श्रद्धा के केंद्र महान चमत्कारी प्रतापी वात्सल्य दाता जग जयवंत श्री जीवित स्वामी शुभ गणधर के हतक प्राण प्रतिष्ठा 23वें तीर्थकर जीरावला पार्श्वनाथ भगवान की अंजन शलाका प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव निर्विघ्न सम्पन्न हुई 18 समुदाय के आचार्यों भगवंतों द्वारा एवं 1500 से अधिक श्रमण–श्रमणी वृंद एवं लाखों श्रद्धालुजन साक्षी में अंजन प्रतिष्ठा महामहोत्सव सम्पन्न हुआ। 84 गच्छ श्रमण–श्रमणी वृंद की आस्था ओर 5–5 महान प्रभावक आचार्य भगवंतों के सम्पूर्ण प्रयास से यह कार्य सम्पन्न हुआ। अनेक श्रेष्ठीगणों के द्वारा विश्व में चर्चित यह अंजनशलाका प्रतिष्ठा का महामहोत्सव सब अनेक कीर्तिमानों के साथ कई कार्यकर्ताओं के माध्यम से ओर सम्पूर्ण जीरावला पार्श्वनाथ जैन ट्रस्ट की 18 साल की महनत से यह कार्य सम्पन्न हुआ। विश्व विख्यात दादा के चढ़ावे की विश्व विख्यात हुए मार्गदर्शन गुरु भगवंत के सान्निध्य में जो कार्य वर्षों से चर्चित था वह कई शंका कुशंका से भरा हुआ था जीरावला तीर्थ के बारे में लोगों को कई शंका कुशंका भरी हुई थी वह श्रद्धा जीरावला दादा तथा समस्त गुरुभगवंतों के सान्निध्य से निर्वघ्न हुआ। मार्गदर्शक गुरु भगवंत श्री सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद विजय, जयघोष सूरीजी म.सा., परम पूज्य दीक्षा दानेश्वरी आचार्य श्री गुणरत्न सूरीजी म.सा., परम पूज्य वैराग्यवाचनादक्ष आचार्य श्रीमद विजय यशोविजय सूरीश्वरजी म.सा., परमपूज्य मालव भूषण तप सम्राट आचार्य श्री नवरत्न सागर सूरीजी मसा एवं परम पूज्य गौड़वाड़रत्ना परम पूज्य आचार्य श्री सूरीजी महाराजा आदि मार्गदर्शक गुरु भगवंत के पावन सान्निध्य से एवं ट्रस्ट मंडल की मेहनत से महामहोत्सव का आगाज हुआ और श्रमण श्रमणीवृंद के आगमन से जो पंच दिवसीय का माहौल न भूतो न भविष्यति सोचा न समझा ऐसा पंचकल्याण का माहौल सर्व प्रथम बार जिनशासन के अंदर ऐसा देखने को मिला एक से बढ़कर एक गुरु भगवंत एक से बढ़कर एक जाप एक से बढ़कर एक तपस्या एक से बढ़कर एक कर्म निर्जरा का मुकाम ऐसा लगता था देवलोक साक्षात धरती पर उतर आया हो साक्षात राजनगरी काशी नगरी की जैसी श्वेतगेट धर्मसभा मंडल सब कुछ अद्भूत था पर एक वस्तु मौजूद वर्यक्तियों पर कमान थी क्या है आचार्य भगवंत मुनि भगवंतों साध्वी भगंवतों को या श्रावक श्राविका चतुर्मासिक संघ सभी के मुख पर एक ही बात की आज अगर महान तपस्वी आचार्य भगवंत नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराज यही मौजूद होते तो यहां पर और आनंद आता, उनको सभी व्यक्तियों ने पूर्ण श्रद्धा से याद किया।

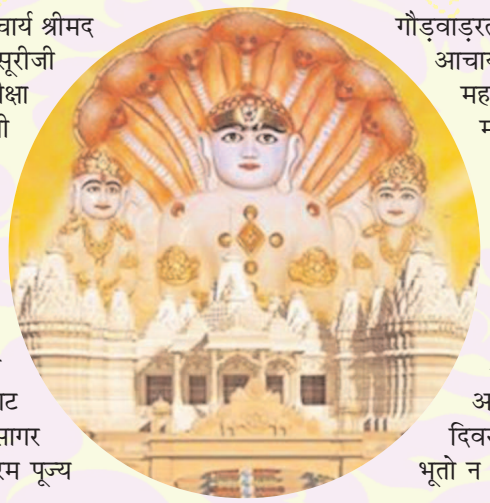

राग द्वेष से रहित सर्वज्ञ देवेन्द्र द्वारा पूर्णता सत्यवस्तु के प्रइपक, त्रिलोक गुरु प्रभु समस्त ऐश्वर्यादि से युक्त एवं समस्त वैभओं के त्यागी सर्वोत्तम पून्यकेघणी धर्मचक्रवर्ति सर्वज्ञ पुइषादानिय दादा श्री जीरावला पार्श्वनाथ की जब प्रतिष्ठा हुई तब देवो ने भी अपमि स्वयं की हाजरी दी और भव्य केशर के छाटने व आमिझरा करके प्रभु भक्ति की। 10 भवकी मोक्ष यात्रा में पदपद पर खड़ी विकट परिस्थिति में भी समाधि रसायन द्वारा आत्मा का कलुशित बनने से रोकने हेतु समाधि के परम साधक का यह कवच सब जीवो के लिए समाधि प्रदाता बने यही जग तप दादा जीरावला पार्श्वनाथ भगवान से प्रार्थना।

ऊँ हीं श्रींश्री जीरावला पार्श्वनाथाय रक्षां कुरु कुरु स्वाहः

नवरत्न संदेश

- मुंबई राधनपुर तीर्थ से पधारे हजारों श्रावक–श्राविका ने नूतन दीक्षत गुरुभगवंतों के दर्शन से किए नयन पावन...
- प्रसिद्द ऐसे 11 सिंगरों के द्वारा हुई भव्य विदाई जोकि 9 बजे से 2.30 बजे तक चली व हुई सबको आंखे नम..।
- गुरु नवरत्न के गुरुकुल में प्रवेश किया दो नए आत्मार्थी ने
- गच्छाधिपति हेमप्रभ सूरीजी व आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी सह 8 आचार्य भगवंतों व शताधिक साधु–साध्वी का मिला सुहाना सान्निध्य।
- सागर समुदाय में वर्षों के बाद ऐसी भव्य दीक्षा हुई।
- रम्य रत्न सागरजी बने वर्तमान जिनशासन में सबसे बाल साधु।
- अलका बेन बने अमरयशाश्रीजी, उर्वी बेन बने वैराग्यरुचि श्रीजी, काजल बेन बने करुणानिधी श्रीजी म.सा.।

शंखेश्वर में दोहराया इतिहास हुई पांच नयनरम्य भागवति प्रवज्या संपन्न

मुमुक्षु पंकजभाई बने पद्मरत्न सागर व बाल मुमुक्षु संयम कुमार बने बालमुनि रम्प रत्नसागर

शंखेश्वर महातीर्थ। जन–जन की श्रद्धा व आस्था के केंद्र त्यागी तपस्वी गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागर सूरीश्वर जी म.सा. के प्रेरणा को पाकर संयम ग्रहण करने हेतु संकल्पित हुए थे। ऐसे मुमुक्षु भामाशाह श्री अलका बेन पंकज भाई गांधी जिन्होंने गुरुदेव की निश्रा में कई ऐतिहासिक शासन प्रभावक कार्य किए थे। चाहे पालीताणा का चातुर्मास हो या उपधान महातप हो या छःरिपालित संघ हो चाहे प्रभु की प्रतिष्ठा हो या भोपावर तीर्थ का शिलान्यास हो हर जगह अपनी लक्ष्मी का सद्पयोग कर धन्य बने व गुरुदेव ने जीवन में जो संयम के बीच

अंकुरित किए थे वो धीरे–धीरे पौधे के रूप में बड़ रहे थे, व इधर बाल मुमुक्षु संयम कुमार को 4 वर्ष की उम्र में माता–पिता, गुरुदेव श्री को वोहरा दिया था वह भी अध्ययन में रत बने थे गुरुदेव श्री का अंतिम चातुर्मास चैन्नई नगर में था व मुमुक्षु समय की दीक्षा भी वही होने वाली थी लेकिन किसी कारणवश न हो पाई लेकिन किसी को यह अंदाजा न था कि अब गुरुदेव के स्वहस्त से इनकी दीक्षा न हो पाएगी पर काल तो काल होता है उस पर विजय पाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है केवल सिद्ध भगवंत ही ऐसे हो जो कालभक्षि है जिन्होंने काल पर विजय प्राप्त करना है लेकिन गुरुदेव की इच्छा अनुसार दोनों मुमुक्षु संसारी से साधु व साधु से सिद्ध बनने की यात्रा पर गुरु विश्वरत्न के साथ जुड़ गए व शंखेश्वर महातीर्थ में तीन और मुमुक्षु ने उनका साथ दिया और असार संसार को तज सार रूपी संयम को ग्रहण किया।

सीरोही के इतिहास के सैकड़ों वर्ष बाद हुई ऐसी भव्य दीक्षा

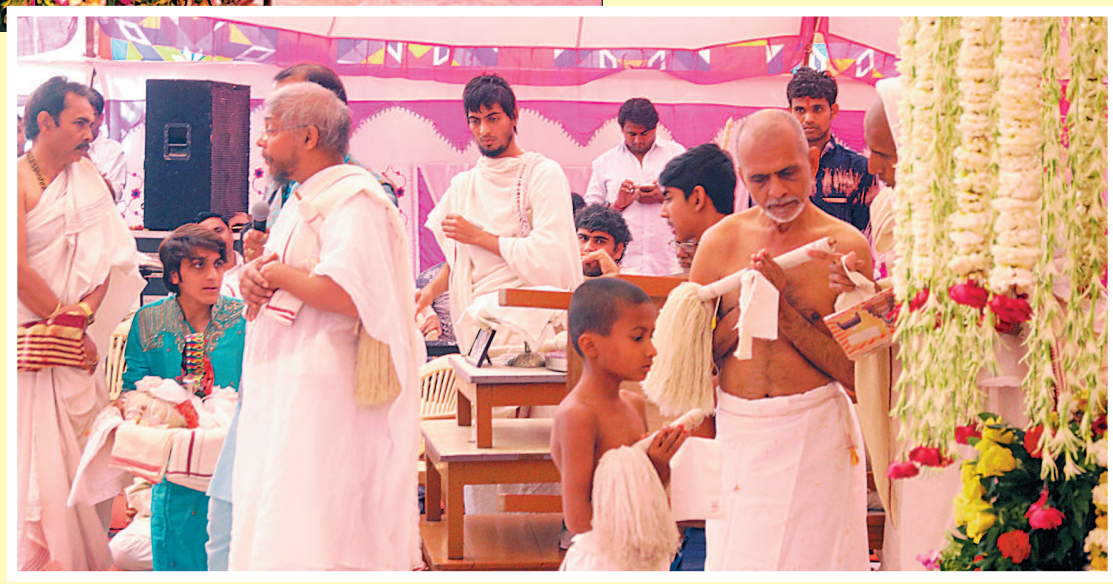

- चेन्नई निवासी मुमुक्षु श्री मुकेश कुमार की भागवती प्रवज्या धूमधाम पूर्वक संपन्न
- अभयचंद्र भाणा जी परिवार के कुलदीपक बने जिनशासन के वीर सुभर
- युवा हृदय सम्राट के 9 नंबर के शिष्य बने लब्धिरत्न सागरजी
- नवरत्न सागर सूरी महाराजा के संघ में प्रथम बार प्रवेश किया मारवाड़ी महात्मा ने
- राजस्थान प्रवास दौरान अनेक संघों द्वारा हुई गुरुदेव को महामांगलिक व चातुर्मास की विनंती

सीरोही। चैन्नई नगर में गुरुदेव श्री नवरत्न सागर सूरीश्वर जी म.सा. का यशस्वी चातुर्मास व उपधान महातप से सैकड़ों भव्य जीव प्रभु व गुरु भक्ति से भावीत हो रहे थे इसी अंतर्गत मुकेश कुमार को गुरुदेव की प्रेरणा व संबलमिला गुरुदेव की जीनवाणी से कर्मों का पहाड़ डोल उठा चारित्र मोहनीय कर्म का उद्य हुआ मन में वीतराग पथ पर चलने की भावना मजबूत हुई। लेकिन परिवार अपने मोह के कारण संयम पथ पर चलने की आज्ञा नहीं दे रहे थे।

मुमुक्षु की उपधान तप की आराधना के अंतर्गत भावना और मजबूत बनी परिवार से कहा अगर आज्ञा नहीं दी तो में कभी भी पौषध का त्याग नहीं करूंगा ऐसे अनेक कई नियम ले रखे थे परिवार को इनकी संकल्प शक्ति के आगे हार मानना पड़ी और कहा इनकी राजस्थान की दिव्य नगरी व हमारी जन्म भूमि सीरोही नगर में दीक्षा करावो लेकिन विधि की विडंबना थी कि गुरुदेव के स्वहस्त दीक्षा नहीं हो सकी पर गुरुदेव की इच्छा आचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीमहाराज के द्वारा पूरी हुई व मुमुक्षु मुकेश कुमार लब्धि रत्न सागर जी में परिवर्तित हुए नवरत्न परिवार यही मंगल कामना करते की आपका संयम जीवन निर्विहन रूप बने।

गुण के सागर नवरत्नसागरसूरि जी

गुणा के सागर नवरत्नसागरसूरि जी
क्या करे गुरुवर हम आप के गुणगान
गुरुवर आप हो सब से महान
गुरुवर आप बने हो जिनशासन की शान
करते हैं आप के चरणों में जीवन कुर्बान

जैसे सागर कितना गहरा है वो माप नहीं जा सकता वैसे ही हमारे प्यारे तपोनिष्ठ–जपोनिष्ठ गुरुवर के गुण भी अनंत है कि मापा नहीं जा सकता। 73 साल की उम्र में भी आप के मुख पर तेजस्वीता, शरीर में स्फूर्ति, तप, त्याग, जप, ध्यान आदि एक युवान का भी पीछे हटाए ऐसा था। आप का जपतप त्याग, ध्यान साधना देख के ऐसा लगता था कि आप में वेगह देवताह शक्ति हो इतनी उम्र के साथ में हवन, तप त्याग होते हुए भी मुख पर तेजस्वीता, शरीर में स्फूर्ति दिखाई देती थी।

आप का नाम नवरत्नसागर सूरीजी था नाम के आधार से ही आपने जिनशासन के नवरत्न अपनाए थे, तप कठोर साधना, त्याग, जप, गंभीरता, करुणा, जयणा, परमात्मा भक्ति, नवपद आराधना थे नवरत्न आप के जीवन में गुंथा गए थे। तप में आयंबिल का तप आप को प्रिय था आपका प्राण था प्राय: दो द्रव्य से आयंबिल आप का नियम था, क्योंकि आपने रसनेद्रिय को जीत लिया था आपने तप द्वारा साधना की ज्योति प्रगट की और साधना द्वारा तप के मोती प्राप्त किए थे। आपने आप के जीवन में साधना के मोती खूब लुटाए थे, तप त्याग आप के जीवन से गुंथा गया था।

आप का जपबल भी उतना ही मजबूत और प्रभावशाली था,जब तक जाप न हो तब तक पानी भी नहीं लेते आप का नियम था। जैसे सागर गंभीर होता है वैसे ही आप गंभीर थे। गुरुवर आप वात्सल्य के सागर थे। आप करुणा के भंडार थे। आप के रक्त के कणकण में करुणा

बसी हुई थी। विश्व के सभी जीवों के प्रति आप के हृदय में करुणाभाव छलकता रहता था। किसी भी व्यक्ति का दुख आपका दुख बन जाता था, आप का प्रभाव ही ऐसा था कि जो आप के चरणों में आए उसका दुख दूर हो जाता था करुणा के साथ–साथ आपके रगरग में जयणा भी बसी हुई थी। एक चीटी भी न मरे ऐसा आप का जयणा का पालन था। प्रभुभक्ति में आप इतने लीन हो जाते थे जैसे भक्तिमय ही बन जाते थे। गुरुवर आप नवपद के अटूट आराधक थे आप नवनिधि के दायक थे आपने नवरस नवरगों से ज्ञान को समझा था आपने अनेकों अजैन की भी जैन बनाया था।

तप–त्याग में आप का जीवन इतना ओतप्रोत था कि आप का सान्निध्य पाने वाला सहज आप से कुछ पा जाता था आपके सान्निध्य में जो आता था उसको तप त्याग का ऐसा रंग लगता था कि उसका जीवन ही बंध जाता था प्राय: सब में तप या जप दोनों में से एक होता है लेकिन गुरुवर आप में तो तप, त्याग, जप, ध्यान सब गुण थे। विरल विभूति, मालवविभूषण आदि पद्वी से आप विभूषित हुए थे। सब भक्तवर्ग के लिए आप भगवान समान थे। अचानक आप के चले जाने से हम को ऐसा महसूस हो रहा है कि हम अनाथ हो गए है गुरुवर उत्तम था आप का संयमाजीवन और कठोर थी आपकी मोक्षमार्ग की साधना गुरुवर आपने तप की ज्योति से जीवन को सजाया त्याग के मोती से आत्मा को मोक्ष जप से मुक्तिमिनार की ओर मन की मोक्ष ध्यान से प्रभु भक्ति में मन को मोक्ष।

नव– नवनिधि दायक
रत्न – अमूल्य रत्नों के भंडार
सागर – सागर जैसे गंभीर
सूरिजी – साधना मार्ग के पथिक

भूल न पाएंगे गुरुवर आप को हजारों साल करते रहेंगे याद आप के उपकार की बार–बार बरसते रहना आशीष हम पर अनराधार हिन्दू–गुणज्ञा–सुरेखा–चारित्र–शिशु–नवपूर्व की वंदना...।

19 तारीख नीमच से हुआ युवा हृदय सम्राट श्री का मालवा में आगाज

आदर्श रत्न सागर जी म.सा. ने कहा जहां मां जैसा प्यार मिले वह है मालवा

संपूर्ण मालवा से पधारे गुरुभक्तों ने की आगवानी

सांसद सुधीर गुप्ता ने भी लिया गुरुदेव का आशीर्वाद

नीमच संघ ने करी चातुर्मास वह महामांगलिक की विनंती

गुरुदेव का आगमन से धर्ममय बनेगा मालवा

29 मार्च को रतलाम शहर में होगी गुड़ी पड़वा की महाप्रभावशाली महामांगलिक

नीमच। गुरुदेव के बिना प्रथम बार उनके अंतेवासी शिष्य विश्वरत्न सागर सूरीजी व आदर्शरत्न सागर जी म.सा. ने मालवा में प्रवेश नीमच शहर से किया गुरुदेव की आगवानी में संपूर्ण मालवा से गुरुभक्त पधारे व नीमच शहर को जय जय गुरुदेव के नारों से गुजांडिया गुरुदेव ने कहा कि गुरुदेव की यहां अंतिम एमपी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा थी गुरुदेव के बहुत अकेलापन महशुसकर रहा हूं लेकिन मालवावासियों हमेशा साथ में ही है क्योंकि पहले में गुरुदेव के कार्यों का मैनेजमेंट करता था,लेकिन आज गुरुदेव हमारे सारे कार्यों का मैनेजमेंट कर रहे हैं। नीमच श्रीसंघ नवरत्न परिवार की ओर से सम्पूर्ण आयोजन रखा गया था।

नवरत्न संदेश के स्वामित्व एवं अन्य विवरण
फार्म–4 (नियम–8)

प्रकाशन स्थान	:	12 प्रेस कॉम्प्लेक्स ए.बी. रोड, इंदौर
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	प्रेम कुमार डूंगरवाल
पता	:	12 प्रेस कॉम्प्लेक्स ए.बी. रोड, इंदौर
प्रकाशक का नाम	:	प्रेम कुमार डूंगरवाल
क्या भारत का नागरिक है (यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	हां
पता	:	12 प्रेस कॉम्प्लेक्स ए.बी. रोड, इंदौर
सम्पादक का नाम	:	राकेश मारवाड़ी
क्या भारत का नागरिक है (यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	हां
पता	:	12 प्रेस कॉम्प्लेक्स ए.बी. रोड, इंदौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साक्षेदार या हिस्सेदार हों–	:	प्रेम कुमार डूंगरवाल

मैं प्रेम कुमार डूंगरवाल एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 5 मार्च 2017 **प्रेम कुमार डूंगरवाल**
(प्रकाशक/मुद्रक के हस्ताक्षर)

बड़ोद में महामांगलिक व भागवति प्रवज्या सम्पन्न

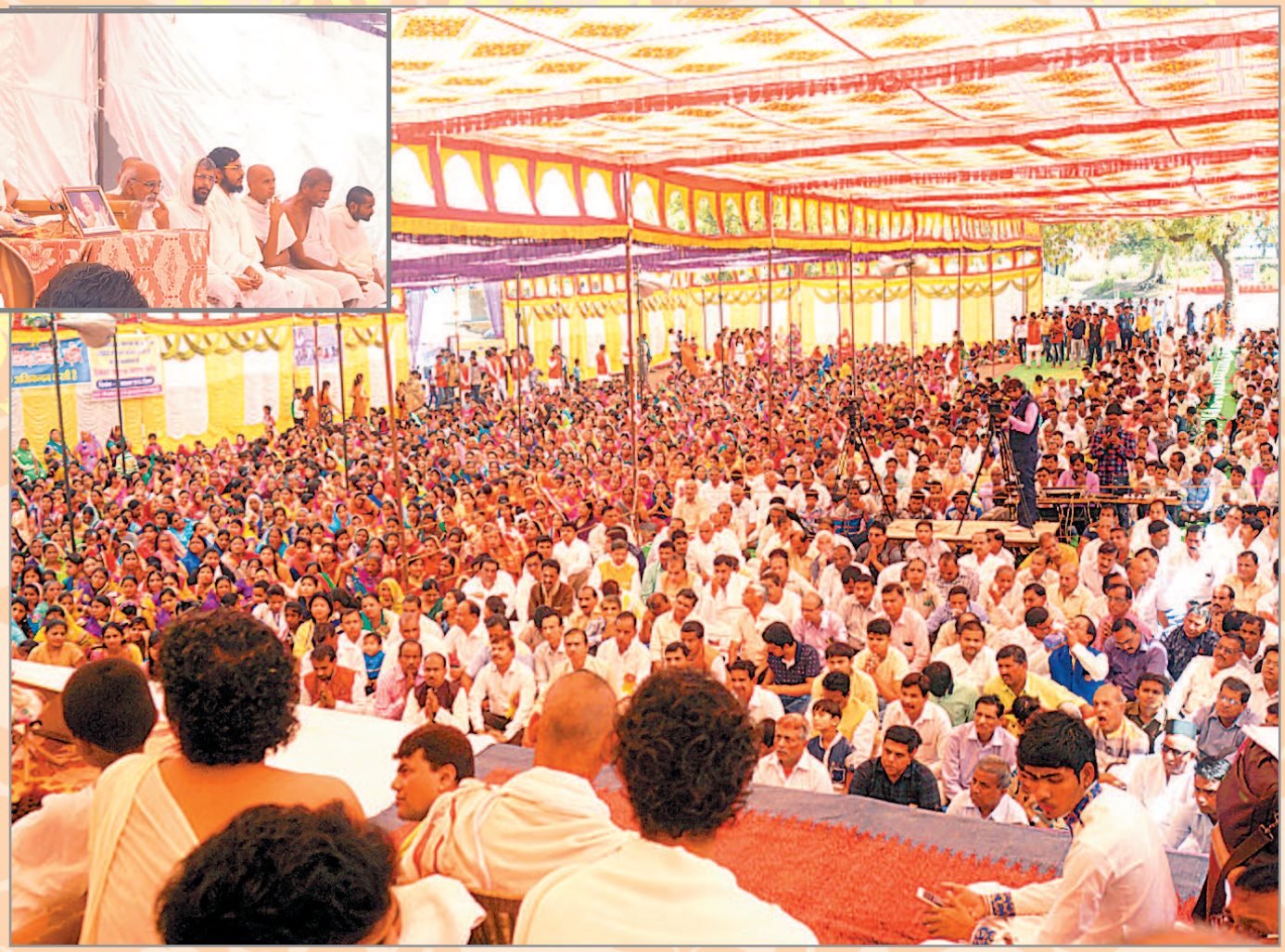

गुरुदेव की प्रथम महामांगलिक बड़ोद नगर में जोरदार सम्पन्न

हजारों भक्तों ने दिया भक्ति का गुरु भक्ति का परिचय मुंबई से पधारे संगीतकार अनिल भाई गेमावत की गुरु भक्ति में झूमे भक्त

महावीर जैन विद्या मंदिर का हुआ उद्घाटन गुरुदेव का हाथों से

27 स्कूल बनेंगे संपूर्ण मालवा में गुरुदेव की प्रेरणा से

टीना बेन बने अकर्हत् ज्योति श्री जी म.सा. बने सिद्धांत ज्योति श्रीजी की प्रशिष्या व अद्धज्योति श्री जी की शिष्या

राजस्थान मंत्री प्रमोद जी भाया ने लिया नामकरण का चढ़ावा व सांसद मनोहर ऊंटवाल ने लिया अंतिम विदाई तिलक का चढ़ाया।

बड़ोद। गुरुदेव श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. की महामांगलिक विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी द्वारा भक्तों के कल्याण हेतु हर महीने की सुदी एकम को दी जाती है उसी क्रम में मालवा में गुरुदेव के बिना महामांगलिक बहुत जिसमें हजारों भक्तों ने ऋण किया व साथ ही कई वर्षों से संयम की भावना को संजो रखा था ऐसी बड़ोद नगर की लाड़की बीटिया टीना भी स्वार्थ भरे संसार को छोड़कर नि:स्वार्थ ऐसे प्रभु महावीर के पथ को अंगीकार किया। पूरे बड़ोद के इतिहास में प्रथम बार ऐसी दीक्षा हुई व पूरे बड़ोद नगर को धर्ममय बना दिया बड़ोद श्रीसंघ व नवरत्न परिवार का बड़ोद महोत्सव में बड़ा योगदान रहा जो अविस्मरणीय है।

आगर में भव्य नगर प्रवेश

मक्सी में भव्य नगर प्रवेश

मक्सी में जन्मोत्सव उत्सव के पूर्व मक्सी में भव्य नगर आगमन हुआ।

गुरु जन्मोत्सव हेतु उज्जैन नगर में भव्य प्रवेश

नवरत्न परिवार उज्जैन शहर के सर्व महिला मंडल व नवरत्न बालिका मंडल ने की गुरुदेव की भव्य आगवानी जन्मोत्सव की घड़ियां आई है संपूर्ण मालवा में खुशियां छाई हैं।

उज्जैन। मालवभूषण आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी के शिष्य पट्ठधर आचार्य विश्वरत्नसागरजी व मुनि मंडल का मंगल प्रवेश बैंडबाजे के साथ उत्साहपूर्वक हुआ। आचार्यश्री ने कहा गुरुदेव जैसी सरलता व तप आचरण सभी के जीवन में होना चाहिए।

दौलतगंज स्थित शीतलनाथ कांच के जैन मंदिर से प्रारंब हुए जुलूस में नौ महिला मंडल की महिलाएं कलश लेकर व जयघोष करते चल रही थीं। पालकी में दिवंगत आचार्यश्री नवरत्नसागरजी की प्रतिमा लेकर युवा चल रहे थे। मार्ग से अक्षत-श्रीफल से गंहूली की गई। जुलूस प्रमुख मार्गों से होकर ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी खाराकुआं पहुंचा। यहां धर्मसभा एवं नक्कारशी हुई। स्वागत उद्बोधन पेढ़ी अध्यक्ष महेन्द्र सिरोलिया, ट्रस्टी गौतमचंद धींग ने दिया।

15 मार्च को वरघोड़ा : पेढ़ी ट्रस्ट सचिव जयंतीलाल तेलवाला ने बताया नवरत्नसागरजी म.सा. के 74वें जन्मोत्सव प्रसंग पर 15 मार्च को समारोह आयोजित किया है। पेढ़ी मंदिर से वरघोड़ा निकलेगा, जो महाकाल परिसर अरविंदनगर पहुंचेगा। गायक नरेन्द्र वाणीगोता टीम के साथ प्रस्तुति देंगे। महोत्सव को लेकर शुक्रवार दोपहर 2 बजे समस्त महिला मंडल व रात 8.30 बजे सकल श्रीसंघ की बैठक रखी है। प्रवीण कांकरिया ने बताया आचार्यश्री शुक्रवार 8.30 बजे कांच के मंदिर से सूरजनगर पधारेंगे। यहां श्री जीरावला पार्श्वनाथ नूतन जिनालय का निर्माण होना है। धर्मसभा व नवकारसी भी होगी।

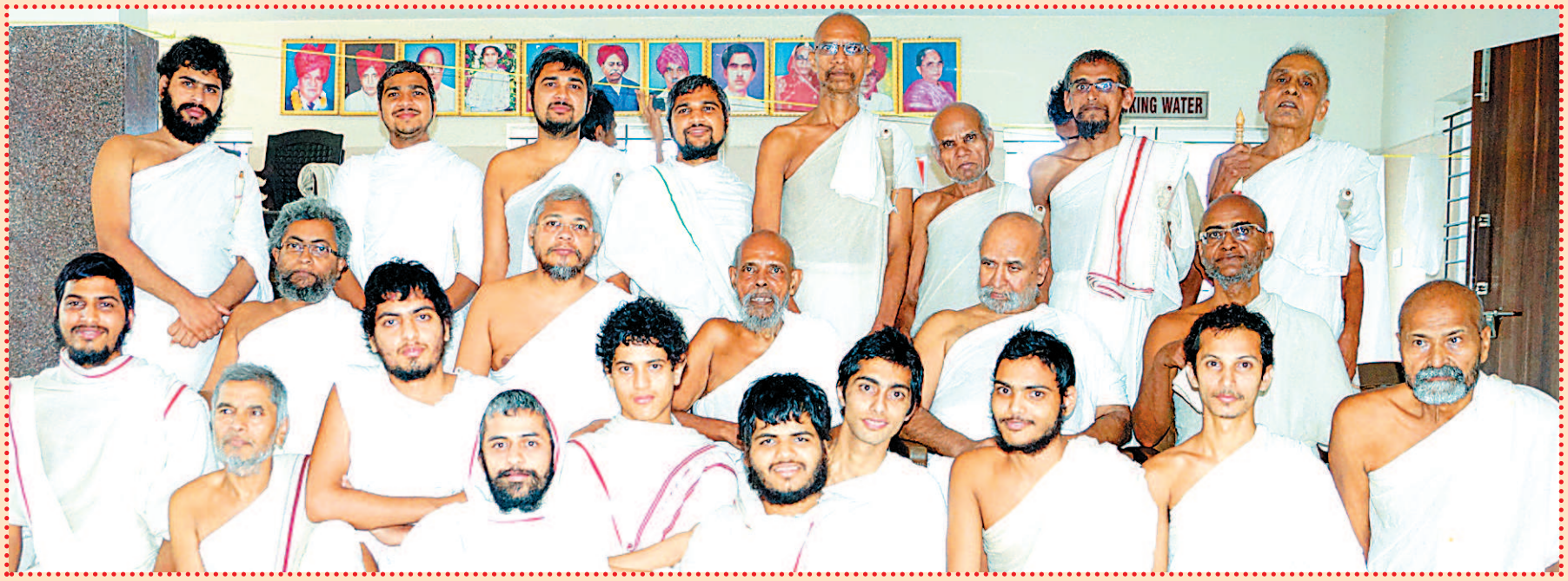

प्रेषक

RNI NO.-MPHIN/2011/37953

राकेश मारवाड़ी, प्रधान संपादक

नवरत्न परिवार का राष्ट्रीय मासिक मुखपत्र

नवरत्न संदेश

208 शिबा कॉम्प्लेक्स रीगल चौराहा एम.जी. रोड, इन्दौर

नवरत्न संदेश Postal Reg. NO.MP/ICD/1371/2014-16

प्रति,

श्रीमान.....

.....

.....

पिन.....

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक प्रेमकुमार डुंगरवाल द्वारा कुमार इंजीनियर्स ऑफसेट प्रिंटर्स 19/1 मनोरमागंज पलासिया सर्कल एबी रोड, इंदौर से मुद्रित 12 प्रेस काम्पलेक्स ए.बी. रोड इन्दौर प्रकाशित। संपादक- राकेश मारवाड़ी मो. 94143-08595 (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा)